सरस भारती

तृतीय कक्षा के लिए
(FOR CLASS III)

जम्मू–कश्मीर राज्य–शिक्षा विद्यालय बोर्ड द्वारा प्रकाशित

Imprint Page

सरस भारती

प्रस्तुत पुस्तक 'सरस भारती' को प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि मैं बच्चों को शिक्षित करने के पवित्र कार्य को सम्पन्न करवाने में सफल हुआ हूँ। क्योंकि बच्चे कल के राष्ट्र का भविष्य हैं तथा एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण बच्चों की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा ही राष्ट्र का मेरूदण्ड है तथा जम्मू-कश्मीर राज्य शिक्षा बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन एक ऐसा संस्थान है जो यद्यपि परीक्षाओं को आयोजित करवाने तथा उनसे सम्बन्धित क्रियाकलापों से जुड़ा हुआ है तथापि इस सारी कार्य प्रणाली की मूलाधार शिक्षा ही है। क्योंकि संस्थान का नाम ही जम्मू-कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन है। अत: स्पष्ट है कि शैक्षिक उत्थान एवम् विकास ही इसका मूल उद्देश्य है।

देशबंधु गुप्ता

चेयरमैन जम्मू-कश्मीर स्टेट

बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

सरस भारती

हमारा यह प्रयास है कि समस्त कक्षाओं के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की कार्य प्रणाली 2005 के अनुसार विकसित किया जाए तथा पाठ्यक्रम की सामग्री का चयन छात्रों की कक्षा विशेष के स्तर को ध्यान में रखते हुए किया जाए। इसके अतिरिक्त हमारा उद्देश्य छात्रों को उनके अपने क्षेत्रीय परिवेश से सम्बन्धित जानकारी देना है जिससे उनमें जिज्ञासा तथा रूचि उत्पन्न हो सके तथा अपने आस-पास के देशकाल तथा परिस्थितियों के प्रति जागरुक हो सकें।

डॉ. शेख बशीर अहमद

डायरैक्टर अकैडमिक तथा सैक्टरी

जे. एण्ड के. स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

आभार

जम्मू-कश्मीर स्टेट बोर्ड निम्नलिखित विद्वानों का विशेष आभारी है जिन्होंने प्रस्तुत पुस्तक को विकसित करने में अपना सराहनीय योगदान दिया:-

1. श्री दुर्गा प्रसाद दत्ता प्रिंसीपल, गवर्नमेंट हायर सेकंडरी स्कूल, मुट्ठी (जम्मू)
2. श्री केवल कृष्ण शर्मा प्राध्यापक, गवर्नमेंट हायर सेकंडरी स्कूल, मुबारक मंडी (जम्मू)
3. कुमारी रीटा चाड़क प्राध्यापक गवर्नमेंट हायर सेकंडरी स्कूल शास्त्री नगर, जम्मू।
4. डॉ० बंसी लाल शर्मा, शैक्षिक पदाधिकारी, जे/डी इसके अतिरिक्त मुस्तक से सम्बन्धित कार्यशाला को सफल बनाने में जिन अधिकारियों का विशेष योगदान रहा वे इस प्रकार हैं-

1. डिप्टी डायरैक्टर अकैडमिक, सुरेन्द्र मोहन महाजन
2. डॉ. यासिन हमीद सिरवाल, शैक्षियदाधिकारी
3. श्री प्रदीप कुमार, शैक्षिक पदाधिकारी

दो शब्द

बच्चों में आधुनिक शिक्षा नीति के सम्प्रेषण का अभिप्राय केवल बच्चों को शिक्षित करना ही नहीं अपितु उनमें पठन योग्यता के अतिरिक्त कल्पनाशीललता के गुणों का विकास करना भी है जिससे उनके व्यक्तित्व में मानसिक तथा बैद्धिक समन्वय की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो। पाठ्यक्रम का ध्येय बच्चों में चिंतनशललता के बीजों को प्रस्फुटित एवं अंकुरित करना है। पुस्तक में विभिन्न साहित्यिक विधाओं से सम्बंधित रचनाएँ इस ढंग से प्रस्तुत की गई हैं जिससे बच्चों का रूझान सृजनात्मकता की ओर अग्रसर हो। इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि बच्चे सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित न रहें अपितु बाहरी दुनिया से भी जुड़ सकें। पाठ्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को इस ढंग से शिक्षित करना है कि उनमें घर तथा स्कूल के बीच का अन्तराल समाप्त हो जाए। पाठ्यक्रम में प्रस्तुत विषय वस्तु की अभिव्यक्ति ऐसे गुणों से ओतप्रोत है कि बच्चे उन विषयों पर स्वयम् चिंतन करने के लिये विवश हो जाएं। आधुनिक शिक्षा नीति का वास्तविक लक्ष्य अध्येताओं तथा अध्यापकों को कल्पनाशील प्रक्रिया से गुजरने का अवसर प्रदान करना है। पुस्तक में ज्ञान तथा रोचकता के दोनों पक्षों पर बल दिया गया है। पुस्तक में निहित ज्ञान बच्चे के नैतिक उत्थान का माध्यम है जिससे समाज में एक-दूसरे के प्रति सद्भावना एवं विश्वास बनाए रखने के लिये प्रयत्नशील बने रहें। इसके अतिरिक्त इस बिन्दु की ओर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है कि बच्चे पाठ्यक्रम के किसी भी विषय को रटकर स्मृति पटल पर रेखांकित करने के बजाए उसे समझ कर उस पर विभिन्न कोणों से चिंतन करें अर्थात् कुल मिलाकर वे स्वाश्रित एवं स्वावलम्बित हो जाएँ।

वास्तव में उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ही पाठ्यक्रम को विकसित किया गया है।

Contents

Blank

पाठ–1

प्रार्थना

स्वामी प्रेम अंबर प्राण

शरण कण–कण नफ़रत शक्कर

तुम स्वामी सारी दुनिया के,
तुम ही सागर प्रेम दया के।

पानी आग हवा अंबर में,
तुम ही रहते हो कण–कण में।

दाता, तेरी शरण में आकर,
विनय करें हम हाथ जोड़ कर।

पढ़–लिखकर इन्सान बनें हम,
बच्चे सभी महान बने हम।

नफ़रत को हम दूर भगाएँ,
प्रेम–दया को हम अपनाएँ।

औरों के भी आएँ काम,
अपना भी हो जग में नाम।

सब धर्मों का ज्ञान बढ़ाएँ,
गीत एकता के हम गाएँ।

हम संसार में रहें ऐसे,
रहे दूध में शक्कर जैसे।

रहे शांति से सारी दुनिया,
हम कह सकें, "हमारी दुनिया"।

अभ्यास

प्र01 बताएँः –

(क) सभी बच्चे क्या बनना चाहते हैं?

(ख) बच्चे कौन सा गीत गाना चाहते हैं?

(ग) हमें कौन-कौन से गुण अपनाने चहिए?

उद्देश्यः पाठ का प्रत्यास्मरण।

प्र02 पूरे करेंः –

पढ़-लिखकर _____

बच्चे सभी _____

रहे शांति से _____

हम कह सकें _____

उद्देश्यः (1) स्मरण-शक्ति का विकास।
(2) वाक्य-पूर्ति का अभ्यास।

प्र03 पढ़ें, समझें और लिखें:–

(क) अंबर, शांति, करें, बने

_____ _____ _____ _____

सकें रहें धर्मो

_____ _____ _____

उद्देश्य: शब्द ज्ञान बढ़ाना।

(ख) कण, बाण, शरण, कुणाल, गुणवाण, प्रणाम।

_____ _____ _____ _____ _____ _____

* उद्देश्य: "ण" का मध्य तथा अंत में प्रयोग।

प्र04 इस प्रार्थना को याद करके कक्षा में सुनाएँ:–

उद्देश्य: (1) कविता का लय और ध्वनि के साथ वचन।
(2) सौंदर्य अनुभूति।

प्र05 पढ़ें, समझें और लिखें:–

(1) नफ़रत को हम दूर भगाएँ। – हमें नफ़रत को दूर भगाना चाहिए।

(2) प्रेम–दया को हम अपनाएँ। _____

(3) औरों के हम आएँ काम। _____

(4) गीत एकता के हम गाएँ। _____

उद्देश्य: (1) कविता का भाव समझना।
(2) वाक्य का रूप–पनिवर्तन।

**टिप्पणी:* – हिन्दी में 'ण' वर्ण से आरंभ होने वाले शब्द नहीं हैं।

प्र०6 पढ़ें और समझें: –

पालक	=	पालने वाला
अंबर	=	आकाश
महान	=	बड़ा
जग	=	दुनिया

उद्देश्य: शब्दों का अर्थ – परिचय।

पाठ – 2

शेखबाज़ मक्खी

एक था जंगल। उस जंगल में एक शेर भोजन करके आराम कर रहा था। इतने में एक मक्खी उड़ती-उड़ती वहाँ आ पहुँची।

शेर ने दो-तीन दिनों से स्नान नहीं किया था। इसलिए मक्खी शेर के कान के एकदम पास भिन-भिन-भिन करने लगी। शेर को बहुत मुश्किल से नींद आई थी। उसने पंजा उठाया। मक्खी उड़ गई... लेकिन फिर से शेर के कान के पास भिन-भिन शुरू हो गई। अब शेर को गुस्सा आया। वह दहाड़ा-अरे मक्खी, दूर हट। वरना तुझे अभी जान से मार डालूँगा। मक्खी ने धीरे से कहा-छि.... छि....! जंगल के राजा के मुँह से ऐसी भाषा कहीं शोभा देती है? शेर को गुस्सा बढ़ गया। उसने कहा-एक तो मुझे सोने नहीं देती, ऊपर से मेरे सामने जवाब देती है! चुप हो जा... वरना अभी...

मक्खी बोली-वरना क्या कर लोगे? मैं क्या तुमसे डर जाऊँगी? मैं तो तुमसे भी लड़ सकती हूँ। हिम्मत हो तो आ जाओ...!

शेर आग बबूला हो उठा। उसने कान के पास पंजा मारा। मक्खी तो उड़ गई पर कान ज़रा छिल गया। मक्खी उड़कर शेर की नाक पर बैठी तो उसने मक्खी को फिर पंजा मारा। मक्खी उड़ गई। अबकी बार शेर की नाक छिल गई।

मक्खी कभी शेर के माथे पर बैठती, कभी गाल पर, तो कभी गर्दन पर।

शेर पंजा मारता जाता और खुद को घायल करता जाता... मक्खी तो फट से उड़ जाती।

अंत में शेर ऊब गया, थक गया। वह बोला–मक्खी बहन, अब मुझे छोड़ो। मैं हारा और तुम जीतीं, बस।

मक्खी घमंड में चूर होकर उड़ती–उड़ती आगे बढ़ी। सामने एक हाथी मिला। मक्खी ने कहा–अरे हाथी... मुझे प्रणाम कर... मैंने जंगल के राजा शेर को हराया है। इसलिए जंगल में अब मेरा राज चलेगा। हाथी ने सोचा, इस पागल मक्खी से बहस करने में समय कौन बर्बाद करे।

हाथी ने सूँड़ ऊपर उठाकर मक्खी को प्रणाम किया और आगे

बढ़ गया। सामने से आ रही लोमड़ी ने यह सब देखा। लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराने लगी। इतने में मक्खी ने लोमड़ी से कहा-अरे ओ लोमड़ी, चल मुझे प्रणाम कर! मैंने जंगल के राजा शेर और विशालकाय हाथी को भी हरा दिया है।

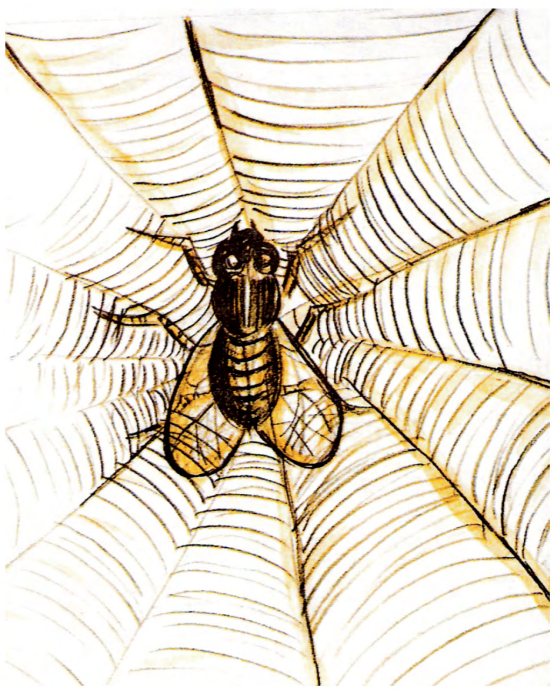

लोमड़ी ने उसे प्रणाम किया। फिर धीरे से बोली-

धन्य हो मक्खी रानी, धन्य हो! धन्य है आपका जीवन और धन्य हैं आपके माता-पिता। लेकिन मक्खी रानी, उधर वह मकड़ी दिखाई दे रही है न, वह आपको गाली दे रही थी। उसकी ज़रा खबर लो न!

यह सुनकर मक्खी गुस्से से लाल हो उठी। मक्खी बोली-उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते खत्म कर देती हूँ।

यह कहते हुए मक्खी मकड़ी की तरफ झपटी और मकड़ी के जाले में फँस गई। मक्खी जाले से छूटने की ज्यों-ज्यों कोशिश करती गई त्यों-त्यों और भी अधिक फँसती गई.... अंत में वह थक गई, हार गई। यह देखकर लोमड़ी मंद-मंद मुस्कराती हुई वहाँ से चलती बनी।

-योगेश जोशी

☛ कैसी लगी कहानी?

कक्षा में साथियों के साथ बातचीत करो।

- तुम्हें कहानी में कौन सबसे अच्छा लगा? क्यों?
- मक्खी मकड़ी के जाल में फँस गई थी। फिर क्या हुआ होगा? कहानी आगे बढ़ाओ।

☛ कहानी का नाम।

- अगर कहानी का नाम मक्खी को ध्यान में न रखकर लोमड़ी और शेर को ध्यान में रखकर लिखा जाता तो उसके क्या-क्या नाम हो सकते थे?
- अब तुम कहानी के लिए एक और नया शीर्षक सोचो। यह शीर्षक कहानी के किसी पात्र पर नहीं होना चाहिए। (कहानी की किसी घटना के बारे में शीर्षक हो सकता है।)

☛ शेर की जगह तुम....

- मक्खी ने जब शेर को जगाया तो वह आग बबूला हो गया। तुम्हें जब कोई गहरी नींद से जगाता है तो तुम क्या करते हो?
- मक्खी उड़ाते-उड़ाते शेर ऊब गया था। तुम क्या करते-करते ऊब जाते हो?

- मान लो तुम शेर हो। मक्खी ने तुम्हारे साथ जो कुछ भी किया वह लोमड़ी को बताओ।

- शेर तो भोजन करके आराम कर रहा था। तुम खाना खा कर क्या करते हो?

  - अक्सर _____

  - कभी-कभी _____

- शेर ने भोजन में क्या खाया होगा? तुम क्या-क्या खाते हो?

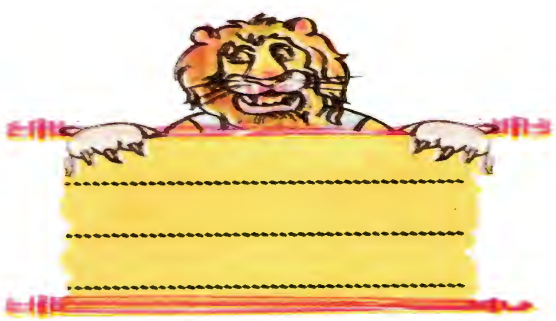

- किसने क्या कहा।

  नीचे कहानी से जुड़ी तस्वीरें दी गई हैं। उसमें कुछ न कुछ बोला जा रहा है। सोचो और लिखो कौन क्या बोल रहा है?

_____ _____

_____ _____

_____ _____

_____ _____

_____

_____

☛ कौन क्या?

कहानी के हिसाब से बताओ।

घमंडी _____ डरपोक _____

चतुर _____ सबसे चतुर _____

समझदार _____ आलसी _____

चुटकी बजाते ही।

चुटकी बजाने का मतलब होता है 'बहुत जल्दी कर लेना।'

- तुम कौन-कौन से काम चुटकी बजाते ही कर लेते हो? बताओ?
- अब तुम अपनी एक टोली बनाओ। तुममें से एक लीडर बनेगा। वह बाकी बच्चों को करने के लिए काम देगा जिसे चुटकी बजाते ही करना होगा। जैसे-बाहर से पाँच पत्तियाँ लाओ और उनके नाम बताओ या शेखबाज़ मक्खी के पात्रों के नाम बताओ। जो सबसे जल्दी कर ले वह लीडर बने।

रास्ता ढूँढ़ो।

यह मकड़ी उस रास्ते से जाना चाहती है, जिस पर चलकर सबसे ज्यादा जाले मिलें। अंदर जाने के लिए 1, 2, 3, 4 और 5 में से कौन-सा रास्ता होगा?

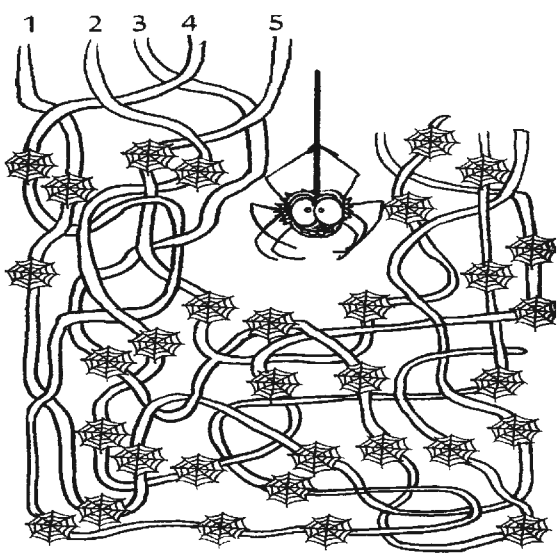

भाषा की बात।

इन वाक्यों को अपने ढंग से लिखकर बताओ।

- शेर आग बबूला हो उठा।
- उसकी ज़रा खबर लो न।

- उस मकड़ी को तो मैं चुटकी बजाते ही खत्म कर देती हूँ।
- जंगल के राजा के मुँह से ऐसा भाषा कहीं शोभा देती है!

उड़ते–मँडराते।

इनके पास तुमने अक्सर किन–किन को उड़ते–मँडराते देखा है?

- जलते बल्ब के आसपास _____ _____
- खेतों में _____ _____
- इकट्ठे पानी के ऊपर _____ _____
- फूलों पर _____ _____
- कचरे के ढेर पर _____ _____
- हलवाई की मिठाइयों पर _____ _____

कौन है शेखीबाज़?

क्या तुम मिसी शेखीबाज़ को जानते हो? कौन है वह? वह किस चीज़ के बारे में शेखी बघारता है?

पाठ – 3

बकरी का बच्चा और भेड़िया

बच्चे शैतान पत्तियाँ भेड़िया शिकारी
कुत्ते कोशिश तुम्हें अच्छा झाड़ियाँ

एक बकरी थी। वह जंगल के पास रहती थी। बकरी के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ रहते थे। जहाँ वह जाती, बच्चे भी उनके साथ जाते।

एक दिन बकरी के बच्चों से कहा, "आज मैं जंगल में घास लाने जा रही हूँ। तुम घर पर ही रहना। बाहर मत जाना।"

बकरी का छोटा बच्चा बहुत शैतान था। वह चुपके से माँ के पीछे चला गया। जंगल के पास एक नाला था। नाले के किनारे हरी-हरी झाड़ियाँ थीं। वह वहाँ पत्तियाँ खाने लगा। बकरी आगे निकल गई।

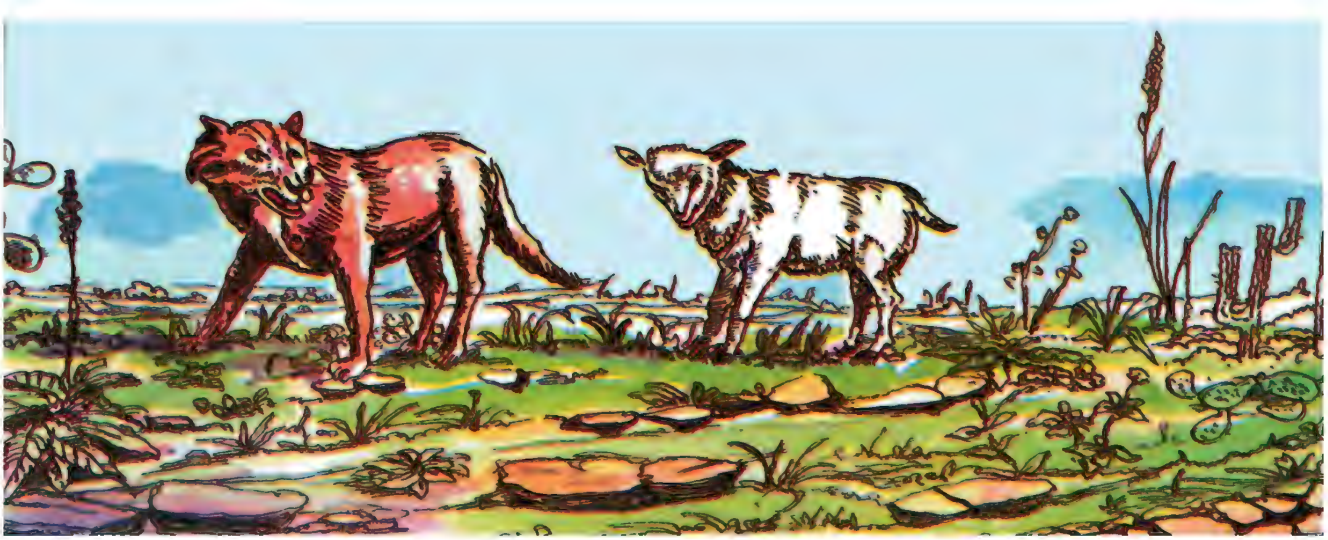

नाले के किनारे एक भेड़िया पानी पी रहा था। उसने दूर से बकरी के बच्चे को देखा। भेड़िए ने सोचा- "अहा! बकरी का बच्चा!! आज मैं इसे जरूर खाऊँगा।" वह धीरे-धीरे उसके पास गया और बोला, "कहो बेटे, क्या कर रहे हो?"

बकरी के बच्चे ने ऊपर देखा। भेड़िए को देखकर वह बहुत डर गया। वह कुछ भी न बोल सका।

भेड़िया फिर बोला, "खाओ, खाओ, खूब खाओ। मुझे भी बहुत दिन से खाने को कुछ नहीं मिला। मैं आज तुम्हें खाऊँगा।"

बकरी का बच्चा डरते-डरते बोला, भेड़िए मामा, मैं तो अभी बहुत छोटा हूँ।"

भेड़िया बोला, "मुझे बकरी के छोटे बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं।"

बकरी का बच्चा कुछ सोचने लगा। फिर बोला, "मामा, पहले मुझे एक गाना सुना दो। फिर मुझे खा लेना।"

भेड़िया बोला, "गाना! मुझे गाना नहीं आता।"

बकरी के बच्चे ने फिर कहा, "मेरी माँ कहती है, भेड़िया मामा बहुत बच्छा गाते हैं।"

यह सुनकर भेड़िया बहुत खुश हुआ। वह ऊँची आवाज़ में गाने लगा। दूर कुछ शिकारी कुत्ते जा रहे थे। कुत्तों ने भेड़िए की आवाज़ सुनी। वे सब नाले की ओर दौड़ पड़े।

भेड़िया आँखें बदं किए गा रहा था। इतने में कुत्ते वहाँ आ

पहुँचे। भेड़िया घबरा गया। उसने भागने की कोशिश की, पर कुत्तों ने भेड़िए को पकड़ लिया।

बकरी का बच्चा तेज़ी से घर भाग गया।

अभ्यास

प्र01 बताएँः –

(क) बकरी जंगल में क्यों गई?

(ख) बकरी के बच्चे को नाले पर कौन मिला?

(ग) बकरी का बच्चा क्यों ड़र गया?

(घ) भेड़िए के गाना गाने पर क्या हुआ?

उद्देश्यः (1) पाठ का प्रत्यास्मरण।
(2) प्रश्नोत्तर का अभ्यास।

प्र02 पढ़ें, समझें और लिखेंः –

(क) बच्चा – बच्चे, किनारा – किनारे, भेड़िया – भेड़िए

____ ____ ____ ____ ____ ____

लड़का – लड़के, कुत्ता – कुत्ते।

____ ____ ____ ____

उद्देश्यः आकारांत शब्दों का वचन – परिवर्तन।

(ख) मामा, पहले मुझे एक गाना सुना दो।

उद्देश्य: पठन, वाचन और लेखन का अभ्यास।
संकेत: सुलेख का ध्यान रखें।

(ग)

कुत्ता	पत्ती	सत्ता	रत्ती
____	____	____	____
सख़्त	तख़्त	ग्यारह	दुग्ध
____	____	____	____
गुप्त	सप्ताह	व्यास	अभ्यास
____	____	____	____

उद्देश्य: (1) पाई को हटा कर आधे वर्णों के लिखने का अभ्यास।
(2) द्वित्व-वसंजन का परिचय।
(3) व्यंजन-गुच्छ का अभ्यास।

प्र03 सही शब्दों से वाक्य पूरे करें:-

(क) बकरी के ———————— बच्चे थे। (दो/तीन)

(ख) बकरी का बच्चा बहुत ———————— था। (शैतान/नादान)

(ग) भेड़िया ——— आवाज़ में गाने लगा। (ऊँची/मीठी)

(घ) बकरी का बच्चा ——— से घर भाग गया। (तेज़ी/धीरे)

(ङ) छोटे बच्चे बहुत ———————— लगते हैं। (अच्छे/बुरे)

उद्देश्य: सही शब्दों से वाक्य-पूर्ति

प्र04 बताइए, किसने कहा:-

(क) "आज मैं जंगल में घास लेने जा रहा हूँ।"

(ख) "कहो बेटे, क्या कर रहे हो?"

(ग) "भेड़िए मामा, मैं तो अभी बहुत छोटा हूँ।"

(घ) "मुझे बेरी के छोटे बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं?"

(ङ) "मामा, पहले गाना सुना दो।"

उद्देश्य: (1) पाठ का प्रत्यास्मरण।
(2) स्मरण-शक्ति का विकास।

प्र05 श्रुतलेख:-

शैतान, कोशिश, भेड़िया, झाड़ियाँ, अच्छा, मच्छर,
धीरे-धीरे, पत्तियाँ, ज़रूर, जंगल, आवाज़।

उद्देश्य: श्रवण व लेखण कौशलों का अभ्यास।

प्र06 पढ़ें समझें और लिखें:–

(क) बच्चा : बच्चे के लिए मिठाई आई।

किनारा : ———— पर आदमी खड़े थे।

भेड़िया : ———— से बकरियाँ डरती थीं।

लड़का : ———— की पुस्तकें मेज़ पर थीं।

कुत्ता : ———— की दुम टेढ़ी है।

उद्देश्य: कुछ आकारांत पुलिंग शब्दों का रूप-परिवर्तन।

(ख) 1. मैं घास ला रहा हूँ। तुम घास ला रहे हो। वह घास ला रहा है।

2. मैं पढ़ा रहा हूँ। तुम————। वह पढ़ा ———— ।

3. मैं सो रहा हूँ। तुम————। वह सो ———— ।

4. मैं चल रहा हूँ। तुम————। वह ———— ।

उद्देश्य: पुरूषावाचनक सर्वनाम के साथ क्रिया की अन्विति।

प्र07 पढ़ें और समझें:–

शैतान = शरारती, तेज़

शिकारी = शिकार करने वाला

उद्देश्य: अर्थ परिचय।

पाठ – 4

बाबा जित्तो

पूजापाठी ईश्वरभक्त पालन–पोषण देहांत
लालन–पालन नामलेवा उपज परिश्रम हड़पना
अन्याय आत्महत्या बलिदान ज़मींदार

बाबा जित्तो 'घार' नामक गाँव के रहने वाले थे। यह गाँव कटरा के पास है। बाबा जित्तो बड़े पूजापाठी और ईश्वरभक्त थे। वे खेती–बाड़ी से आने परिवार का पालन–पोषण करते थे। उनकी पत्नी कानाम मायादेवी था। विवाह के कुछ ही दिनों बाद बाबा जित्तो के माता–पिता का देहांत हो गया। एक वर्ष के बाद उनकी पत्नी

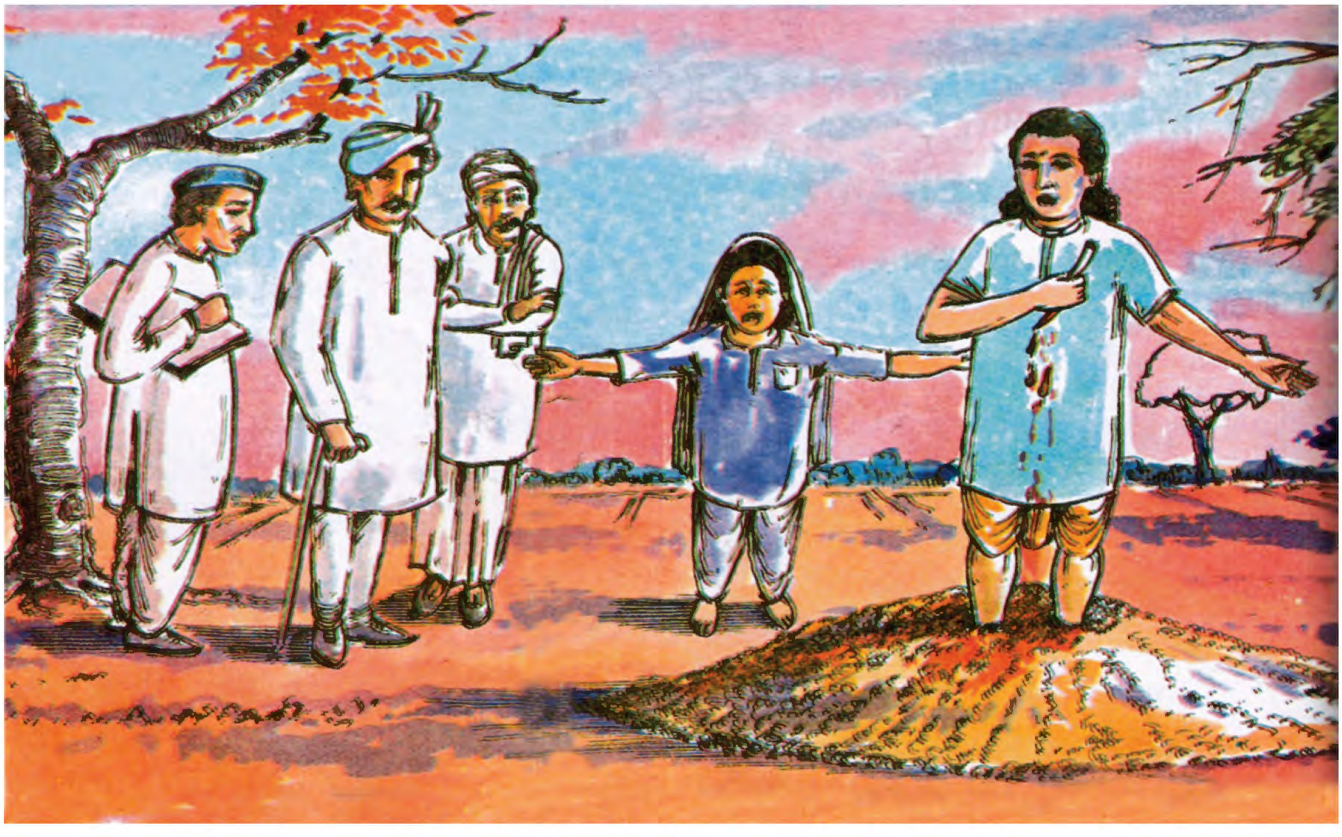

एक बच्ची को जन्म देकर चल बसी। इस बच्ची का नाम बुआ-कौड़ी था। अब बाबा जित्तो बुआ-कौड़ी के लालन-पालन में ही अपना अधिक समय व्यतीत करते थे।

जित्तो की एक रिश्तेदार थी, जोजाँ। उसके सात पुत्र थे। वह जित्तो की ज़मीन हड़पना चाहती थी। वह चाहती थी कि जित्तो के परिवार का कोई नामलेवा भी न रहे ताकि उसकी (जित्तो की) सारी ज़मीन जोजाँ के नाम हो जाए। एक बार उसके जित्तो को विष दिया। दूसरी बार पहाड़ से नीचे धकेल दिया, परंतु जित्तो हर बार बच निकले।

इसके बाद बाबा जित्तो ने बुआ कौड़ी के साथ 'घार' गाँव छोड़ दिया ओर वे कुछ समय घरोटा गाँव में रहे। वहाँ उन्हें एक देहाती ने बताया कि इस गाँव में बुद्धिसिंह मेहता एक बड़ा ज़मीदार है। उसके पास बहुत सी बंजर ज़मीन पड़ी है। आप चाहें तो वह ज़मीन आपको खेती के लिए दिला सकता हूँ।

बाबा जित्तो बुद्धिसिंह मेहता से मिले। तय हुआ कि दोनों आधी-आधी उपज लेंगें। बाबा जित्तो ने कड़ा परिश्रम किया, पत्थर हटाए, झाड़ियाँ उखाड़ीं और भूमि को खेती के योग्य बनाया। बुआ कौड़ी ने भी इस काम में पिता की सहायता की। समय पर बीज बोया गया। खूब उपज हुई। गेहूँ की फसल लहलहाने लगी।

बाबा जित्तो बड़े ईमानदार थे। एक दिन बुआ कौड़ी ने गेहूँ के पौधे से एक दाना तोड़ना चाहा। बाबा जित्तो ने उसे तोड़ने से मना किया और कहा, 'बेटी, हो सकता है कि यह दाना बुद्धिसिंह मेहता के हिस्से का हो, इसलिए इसे मत तोड़ो।"

टिप्पणीः- 'बुद्धसिंह' शब्द का दूसरा रूप 'बुद्धसिंह है।

समय पर फ़सल की कटाई हुई। पैदावार आशा से भी अधिक थी। यह देखकर बुद्धिसिंह ललचा गया। वह सारी की सारी फ़सल हड़पना चाहता था। उसने बाबा जित्तो को किसी बहाने खेत से बाहर भेज दिया। और फ़सल का बहुत बड़ा भाग उठवाकर अपने घर भेज दिया।

बाबा जित्तो जब लौटे, तो उन्होंने देखा कि थोड़ी सी फसल बाबी रह गई थी। वे फ़सल के ढ़ेर पर खड़े हो गए और बोले– "मेहता, तुमने मेरे साथ अन्याय किया है। यह मैं कभी सहन नहीं कर सकता। तुमने सारी की सारी फ़सल यहाँ से उठवा ली है। मेरा हिस्सा मुझे मिलना ही चाहिए।" मेहता पर इसका कोई असर नहीं हुआ। यह अन्याय पर जित्तो का क्रोध भड़क उठा। उनहोंने कटार निकालकर आत्महत्या कर ली। यअ देखकर बुआ कौड़ी से नहीं रह गया और उसने भी आत्महत्या कर ली। यह बलिदान अन्याय के विरोध में था। इस बलिदान की याद में झिड़ी में हर वर्ष एक मेला लगता है। वहाँ जित्तो और बुआ कौड़ी की समाधियाँ हैं। सभी धर्मो के लोग बड़ी श्रद्धा के साथ वहाँ जाते हैं, मन्नते मानते हैं और चढ़ावे चढ़ाते हैं।

अभ्यास

प्र०1 बताएँः –

(क) बाबा जित्तो कहाँ के रहने वाले थे?

(ख) बाबा जित्तो अपने परिवार का पालन–पोषण कैसे करते थे?

(ग) बुद्ध सिंह मेहता और बाबा जित्तो के बीच क्या तय हुआ था?

(घ) बाबा जित्तो ने क्या कहकर बुआ कौड़ी को गेहूँ का दाना तोड़ने से मना किया?

(ङ) बाबा जित्तो और बुआ कौड़ी के बलिदान की याद में मेला कहाँ लगता है।

उद्देश्यः– (1) पाठ का प्रत्यास्मरण।
(2) प्रश्नोत्तर का अभ्यास।

प्र02 इस पाठ में आए व्यक्तियों और स्थानों के नाम पढ़ें और लिखें:–

व्यक्तियों के नाम	स्थानों के नाम
बाबा जित्तो————	घार————
बुआ कौड़ी————	घरोटा————
जोजाँ————	कटरा————
बुद्धिसिंह————	झिड़ी————
मायादेवी————	शामाचक————

उद्देश्यः– स्मरण शक्ति का विकास।

प्र03 दिए गए शब्दों से वाक्य पूरे करें:–

ज़मीन, अन्याय, माता-पिता, श्रद्धा, बेटी।

(क) विवाह के कुछ दिन बाद बाबा जित्तो के ———— का देहांत हो गया।

(ख) बाबा जित्तो की —————— का नाम बुआ कौड़ी था।

(ग) जोजाँ जित्तो की —————— हड़पना चाहती थीं।

(घ) मेहता! तुमने मेरे साथ —————— किया है।

(ङ) झिड़ी के मेले में सभी धर्मों के लोग बड़ी —————— के साथ आते हैं।

उद्देश्यः– उपयुक्त शब्दों से वाक्य–पूर्ति।

प्र04 पढ़ें और समझें:–

(क) जो खेती करे = किसान

(ख) जो लोहे के काम करे = लोहार

(ग) जो मिट्टी के बरतन बनाए = कुम्हार

(घ) जो बीमार का इलाज करे = वैद्य/डॉक्टर

(ङ) जो सोने/चाँदी के गहने बनाए = सुनार

उद्देश्यः– अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग।

प्र05 सही कथन के आगे (✓) और गलत के आगे (x) का निशान लगाएँ:–

1. बाबा जित्तो शामाचक गाँव के रहने वाले थे। ☐
2. बाबा जित्तो खेती–बाड़ी करके आने परिवार का पालन–पोषण करते थे। ☐
3. बाबा जित्तो के सात पुत्र थे। ☐

4. जोजाँ चाहती थी कि जित्तो के परिवार का कोई नामलेवा भी न रहे। ☐

5. बुद्धिसिंह मेहता का बड़ा ज़मींदार था। ☐

6. मेहता की याद में झिड़ी में मेला लगता है। ☐

उद्देश्यः – पाठ का प्रत्यास्मरण।

प्र06 दी गई तालिका से वाक्य पूरे करके लिखें: –

	सादा जीवन	पलते थे।
	'घार' नाम के गाँव के	थे।
बाबा	बड़े पूजापाठी और ईश्वर भक्त	व्यतीत करते थे।
जित्तो	खेती–बाड़ी से परिवार	समय गुज़ारते थे।
	बुआ–कौड़ी के पालन–पोषण में	रहने वाले थे।

जैसे: – 1. बाबा जित्तो सादा जीवन व्यतीत करते थे।

2. ______

3. ______

4. ______

5. ______

उद्देश्यः – सही वाक्यों की रचना

प्र07 पढ़ें और लिखें:–

(क) जित्तो बड़े पूजापाठी और ईश्वर–भक्त थे।

उद्देश्य:– पठन, वाचन और लेखन का अभ्यास।

(ख)

भक्त	भक्ति	मुक्त	मुक्ति	उक्त	उक्ति
____	____	____	____	____	____
____	____	____	____	____	____
____	____	____	____	____	____
____	____	____	____	____	____

उद्देश्य:– (1) 'क्त' व्यंजन–युग्म का अभ्यास कराना।
(2) 'क्त 'के साथ (ि) मात्रा का उचित स्थान पर प्रयोग कराना।

प्र०8 पढ़ें और समझें:–

पूजा–पाठ	=	पूजा–पाठ करने वाला
ईश्वर–भक्त	=	ईश्वर का भक्त
पालन–पोषण	=	पालन–पोसन
देहांत	=	मृत्यु
लालन–पालन	=	पालन–पोसन
नामलेवा	=	नाम लेने वाला
उपज	=	पैदावार
परिश्रम	=	मेहनत
बलिदान	=	कुर्बानी
आत्महत्या	=	खुद अपनी हत्या करना

पाठ – 5

बहादुर बित्तो

एक किसान था। उसकी बीवी का नाम था–बित्तो। एक दिन किसान ने बित्तो से कहा–सुबह जब मैं खेतों में हल चला रहा था तो एक शेर ने आकर कहा–किसान–किसान। अपना बैल मुझे दे दो वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।

बित्तो ने उससे पूछा–तूने क्या जवाब दिया?

किसान ने कहा–मैंने कहा, तू यहीं रुक, मैं घर जाकर अपनी गाय ले आता हूँ। अगर तू बैल खा लेगा तो हम लोग भूखों मर जाएँगे।

यह सुनकर बित्तो को बहुत गुस्सा आया। उसने किसान को

फटकारा–घर की गाय शेर को खिलाते तुझे शर्म नहीं आती? अगर गाय चली गई तो घर में न दूध, न लस्सी। बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे?

बित्तो को एक तकरीब सूझी। उसने कहा–तुम फ़ौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी बित्तो तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।

किसान डरता–डरता शेर के पास गया। उसने कहा–शेर राजा! हमारी गाय तो बड़ी मरियल है। उससे तुम्हारा क्या बनेगा। मेरी बीवी अभी तुम्हारे लिए एक मोटा–ताज़ा घोड़ा लेकर आ रही है।

बित्तो ने सिर पर एक बड़ा–सा पग्गड़ बाँधा और हाथ में दराँती लेकर घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा दौड़ाती वह खेत पर पहुँची और ज़ोर से चिल्लाई–अरे किसान! तू तो कहता था कि तूने चार

शेरों को फाँस कर रखा है। यहाँ तो सिर्फ़ एक ही है। बाकी कहाँ गए? फिर वह घोड़े से उतरकर शेर की तरफ़ बढ़ी और कहने लगी–अच्छा, कोई बात नहीं, नाश्ते में एक ही शेर काफ़ी है।

इतना सुनना था कि शेर डर के मारे काँपने लगा और भाग खड़ा हुआ। यह देखकर बित्तो बोली–देखा, इसे कहते हैं हिम्मत! तुम तो इतने डरपोक हो कि घर की गाय शेर के हवाले कर रहे थे।

उधर मारे भूख के शेर की आँतें छटपटा रही थीं। एक भेड़िए ने पूछा–महाराज, क्या मामला है? आप आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हैं!

शेर ने कहा–कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची है। आज ऐसी राक्षसी से पाला पड़ गया जो रोज़ सुबह चार शेरों का नाश्ता करती है।

यह सुनकर भेड़िया बहुत हँसा। वह सुबह झाड़ी से छिपकर सारा तमाशा देख रहा था। उसने कहा–भोले बादशाह! वह तो बित्तो थी, जिसे आपने राक्षसी समझ लिया था। आप इस बार फिर कोशिश करके देखिए। अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।

बहुत कहने-सुनने पर शेर किसान के खेत में जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन भेड़िए ने कहा–तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।

दोनों जने पूँछ बाँधकर चल पड़े। उन्हें देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए। वह डर से थर-थर काँपने लगा। लेकिन बित्तो बिल्कुल नहीं घबराई। भेड़िए के पास जाकर उसने कहा-क्यों रे भेड़िए, तू तो अभी वादा करके गया था कि तू अपनी पूँछ से चार शेर बाँधकर लाएगा! लेकिन तू तो सिर्फ़ एक ही शेर लाया है! वह भी मरियल-सा! भला इसे खाकर मेरी भूख मिट सकती है? खैर, इस वक्त यही सही। इतना कहकर बित्तो आगे बढ़ी।

शेर के होश-हवास उड़ गए। उसने समझा कि भेड़िए ने उसके साथ धोखा किया है। वह फ़ौरन वहाँ से भागा। भेड़िया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन शेर ने एक न सुनी। तेज़ी से भागता चला गया।

किसान और बित्तो आराम से रहने लगे। उन्हें मालूम था कि अब शेर उनके खेत की तरफ़ फिर कभी नहीं आएगा।

☛ कहानी में ढूँढो।

- शेर किसान से क्या लेने गया था?
- शेर ने बित्तो को राक्षसी क्यों समझ लिया?
- बैल की जान कैसे बच गई?

☛ तुम्हारी ज़बानी।

नीचे कुछ शब्दों के नीचे रेखा खिंची हुई है। उन्हें ध्यान में रखते हुए नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो।

- बित्तो घोड़े पर <u>सवार हो गई</u>।
- तुम घर की गाय को शेर के <u>हवाले कर रहे थे</u>।
- आज एक राक्षसी से पाला पड़ गया।
- अगर बैल आपके <u>हाथ न आए</u> तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।
- शेर को देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए।

बेचारा भेड़िया!

- शेर तो डर कर भाग गया। सोचो तो भेड़िए का क्या हुआ होगा?
- शेर किसान के पास कितनी बार गया था? कहानी देखे बिना बताओ।

✍ खाली जगह में क्या आएगा?

- मेरी छत पर <u>मोर</u> आया।
- मेरी छत पर <u>मोरनी</u> आई।

मोर-मोरनी की तरह नीचे लिखे शब्दों के भी रूप बदलो।

औरत	–	_____	घोड़ा	–	_____
शेर	–	_____	मछुआरा	–	_____
बच्चा	–	_____	राजा	–	_____

मैं नहीं जाऊँगा!

शेर ने बित्तो को राक्षसी समझ लिया। वह खेत में नहीं जाना चाहता था पर भेड़िए के समझाने पर वह राज़ी हो गया। सोचो, शेर और भेड़िए के बीच क्या बातचीत हुई होगी?

शेर – भेड़िए, तुम क्यों हँस रहे हो?

भेड़िया – महाराज, वह तो _____

शेर – नहीं नहीं। वह सचमुच राक्षसी थी।

भेड़िया – मैंने अपनी आँखों से देखा है महाराज। वह _____

_____

शेर – _____

भेड़िया – _____

शेर – ठीक है _____

बोलो, तुम क्या सोचती हो!

- भेड़िए ने शेर को **भोले महाराज** क्यों कहा? क्या शेर सचमुच भोला था?
- शेर ने भेड़िए की पूँछ के साथ अपनी पूँछ क्यों बाँध ली?
- क्या शेर फिर कभी बित्तो के खेत की तरफ़ गया होगा? हाँ, तो क्यों? नहीं, तो क्यों?
- बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

राज का राज़

शेर जंगल पर राज करता था।

मेरा राज़ किसी से न कहना।

राज और राज़ को बोलकर देखो।

दोनों के बोलने में फ़र्क है न?

- कहानी में से ऐसे ही ज़ पर लगे नुक्ते वाले शब्द ढूँढ़ो।

_____ _____ _____ _____ _____

- अब अपने मन से सोचकर ज़ पर लगे नुक्ते वाले पाँच शब्द लिखो।

_____ _____ _____ _____ _____

अगर ऐसा होता तो!

- अगर तुम शेर की जगह होतीं तो क्या करतीं?
- अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

कहानी में तुमने दराँती का चित्र देखा। नीचे ऐसे ही कुछ और औज़ारों के चित्र दिए गए हैं। उन्हें पहचानो और बॉक्स में दिए शब्दों में से सही शब्द ढूँढकर लिखो!

पेचकस खुरपी करनी हथौड़ी आरी

.....

.....

.....

.....

.....

वरना...

- शेर ने किसान से कहा- अपना बैल मुझे दे दो वरना मैं तुझे खा जाऊँगा। वरना शब्दका इस्तेमाल करते हुए तुम भी तीन वाक्य बनाओ।

_____

_____

_____

हम किसी से कम नहीं।

- कई जगहों पर गाँवों में औरतें खेतों में भी काम करती हैं। तुम्हारे आसपास की औरतें और लड़कियाँ क्या-क्या काम करती हैं?

शेर और घोड़ा

शेर और घोड़ें में कई अंतर होते हैं।
ध्यान से सोचकर नीचे लिखो।

	शेर	घोड़ा
खाना	.....	.....
घर	.....	.....
रंग	.....	.....
आदतें	.....	.....

कौन क्या है?

☛ नीचे दिए गए शब्दों को सही तालिका में लिखो।

किसान, बोतल, लता, कक्कू, केला, कलम, राजू, रानू, चूहा, नीना, शेर, जूता, चारपाई, पगड़ी, खरगोश, करेला, छलनी, बित्तो, घोड़ा, गौरैया, बाल्टी, पीपल, कोयल, नीम, किताब, दराँती।

जानवर	चीज़ें	नाम

पाठ – 6

कोयल

कूक – कूक **मिसरी** **संदेश** **घोंसला**

देखो, कोयल काली है पर
मीठी है इसकी बोली।

इसने ही तो कूक-कूक कर
आमों में मिसरी घोली।

कोलय! कोयल! सच बतलाओ,
क्या संदेशा लाई हो?

बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आई हो।

क्या गाती हो? किसे बुलाती?
बतला दो कोयल रानी!

प्यासी धरती देख माँगती
हो, क्या मेघों से पानी?

कोयल! यह मिठास क्या तुमने
अपनी माँ से पाई है?

माँ ने ही क्या तुम को मीठी
बोली यह सिखलाई है?

डाल-डाल पर उड़ना, गाना,
जिसने तुम्हें सिखाया है।

सबसे मीठे-मीठे बोलो,
यह भी तुम्हें बताया है।

बहुत भली हो, तुमने माँ की
बात सदा ही है मानी।

इसीलिए तो तुम कहलाती हो
सब चिड़ियों की रानी

अभ्यास

प्र०1 बताएँः–

(क) कोयल का रंग कैसा होता है?

(ख) कोयल की आवज़ कैसी होती है?

(ग) कोलय ने अपनी माँ से क्या सीखा?

(घ) कोयल को चिड़ियों की रानी क्यों कहते हैं?

उद्देश्यः– (1) पाठ का प्रत्यास्मरण।
(2) प्रश्नोत्त्र शैली का अभ्यास।

प्र02 पढ़ें, समझें और लिखें:–

कहते हैं।	कहलाता है।	दिखाता है।	दिखलाता है।
_____	_____	_____	_____
नहाता है।	नहलाता है।	सीखाता है।	सिखलाता है।
_____	_____	_____	_____

उद्देश्य:– क्रिया के विभिन्न रूपों से परिचित कराना।

प्र03 पूरे करें:–

देखो कोयल काली है

_____

इसने ही तो कूक-कूक कर

_____

क्या गाती हो? किसे बुलाती,

_____

प्यासी धरती देख माँगती

_____

उद्देश्य:– स्मरणशक्ति का विकास।
संकेत: शुद्धलेखन का अभ्यास।

प्र04 सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करें:–

1. कोयल का रंग ———————— होता है। (काला/सफ़ेद)
2. कोयल का गाना ———————— होता है। (मीठा/कड़वा)
3. कोलय चिड़ियों की ———— कहलाती है। (रानी/दासी)
4. कोयल ने अपनी माँ से ———————— सीखा है। (गाना/बोलना)

उद्देश्य:– (1) कविता का भाव समझाना।
(2) वाक्यों के लिए सही शब्दों की पहचान कराना।

प्र05 इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाएँ:–

उद्देश्य:– कविता का लय और ध्वनि के साथ वाचन।

प्र06 पढ़ें और समझें:–

धरती	=	जमीन	घोसना	=	मिलना
मेघ	=	बादल	संदेश	=	ख़बर, पैगाम
भली	=	अच्छी	मिठास	=	मीठापन
सदा	=	हमेशा			

उद्देश्य:– शब्दों का अर्थ–परिचय।

प्र07 कोयल का चित्र बनाएँ:–

उद्देश्य:– सृजनांत्मक शक्ति का विकास।

पाठ – 7

हम सब कहते

नहीं सूर्य से कहता कोई
धूप यहाँ पर मत फैलाओ,
कोई नहीं चाँद से कहता
उठा चाँदनी को ले जाओ।

कोई नहीं हवा से कहता
खबरदार जो अंदर आई,
बादल से कहता कब कोई
क्यों जलधार यहाँ बरसाई?

फिर क्यों हमसे भैया कहते
यहाँ न आओ, भागो जाओ,
अम्मा कहती हैं, घर-घर में
खेल-खिलौने मत फैलाओ।

पापा कहते बाहर खेलो,
खबरदार जो अंदर आए,
हम पर ही सबका बस चलता
जो चाहे वह डाँट बताए।

–निरंकार देव सेवक

नया शीर्षक।

अगर तम्हें इस कविता का नाम बदलने को कहें, तो तुम इसे क्या नाम दोगे?

करो–मत करो।

पाठशाला में और घर में तुम्हें क्या-क्या करने के लिए कहा जाता है और क्या-क्या करने के लिए मना किया जाता है। नीचे वाली तालिका में लिखो।

करो	मत करो
.....	.....
.....	.....
.....	.....

ज़रा सोचो।

- सूरज चाँद की रोशनी को भगा देता है।
- बादल सूरज की रोशनी को भगा देता है।
- हवा बादल को भगा देती है। बताओ, कौन किससे ज़्यादा ताकतवर है?

✧ तुम्हारी बात।

अम्मा, पापा, भैया, दीदी सभी बड़ों का बच्चों पर बस चलता है।

- तुम्हारा किस-किस पर बस चलता है?

- तुम्हारे घर में तुम्हें कौन-कौन टोकता रहता है?

- किन-किन बातों पर तुम्हें अक्सर टोका जाता है?

✧ कौन सी चीज़ कहाँ।

शालू को बहुत-सी चीज़ों के नाम आते हैं। उसने नामों को लिख-लिखकर पट्टी भर ली। वे नाम मैंने नीचे लिख दिए हैं।

शालू की सूची

शक्कर, कबड्डी, पपीता, मार-कुटाई, लोमड़ी, गुलाब, जामुन, शेर, ककड़ी, शतरंज, बल्ला, मगर, लड्डू, गाय, बेर, पेड़ा, बकरी, गिलली, कबूतर, पतंग, मसाला, लट्टू, तोता, शहतूत, चटनी

अब शालू यह सोच रही है कि किस नाम को किस खाने में लिखना है। क्या तुम उसकी मदद कर सकती हो?

अक्षर	जानवर या पक्षी	खाने–पीने का सामान	खेल का नाम या सामान
ब	बकरी	बेर	बल्ला
म	मगर	.....	.....
क	.....	.....	कंकड़
ल	....	.....	लट्टू
प	.....	.....	.....
ग	.....	.....	गिल्ली
श	.....	.....	.....

ऐसे ही खेल तुम और अक्षरों के साथ खेल सकते हो। अलग तरह के खाने भी बना सकते हो–जैसे 'ट' से शुरू होने वाली **गोल या** लाल चीज़।

अब हरेक खाने के नाम वर्णमाला के हिसाब से क्रम से लगाओ–

जानवर या पक्षी	
खाने पीने का सामान	
खेल का नाम या सामान	

'हमसे सब कहते' कविता में जिन लोगों, चीज़ों और जगहों के नाम आए हैं, उन्हें नीचे दी गई तालिका में लिखो।

लोग	चीज़	जगह
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

यह कहानी तुमने कई बार सुनी होगी।

कौआ और लामड़ी

लोमड़ी ने सोचा क्यों न मैं इस कौए को मूर्ख बनाकर रोटी ले लूँ।

एक बार एक कौए को
एक रोटी मिली।

कौए ने जैसे ही गाने के लिए मुँह खोला, रोटी नीचे गिर गई।

लोमड़ी बोली– कौए भाई तुम इतना अच्छा गाते हो! मुझे भी एक गाना सुनाओ।

लोमड़ी रोटी लेकर चली गई।

आओ, अब इन्हीं चित्रों से एक नई कहानी बनाएँ।

पाठ – 8

बंदर – बाँट

स्थान : खुली जगह या कोई बड़ा कमरा।

पात्र : एक बंदर और दो बिल्लियाँ। सात-आठ बरस का लड़का बंदर और पाँच-छह बरस की लड़कियाँ बिल्ली बन सकती हैं।

बंदर के लिए पोशाक: पीला चूड़ीदार पाजामा, कुर्ता और दुपट्टा, जो कमर से पूँछ-सी निकालकर बाँधा जा सकता है, मुँह पर लगाने के लिए बंदर का चेहरा जिसमें आँखों और मुँह की जगह छेद हों।

बिल्लियों के लिए पोशाक: काली सफ़ेद सलवारें, कमीज़ें, दुपट्टे जो कमर में पूँछ-सी निकालकर बाँधे जा सकते हैं। मुँह पर लगाने के लिए काली-सफेद बिल्लियों के चेहरे जिनमें आँखों और मुँह की जगह बड़े छेद हों जिनसे देखा-बोला जा सके।

सामान : एक मेज़, एक बड़ा मेज़पोश या बड़ी चादर, डबलरोटी का एक टुकड़ा, एक छोटी तराजू।

(पहला दृश्य – कोई कमरा)

(कमरे के बीच में एक मेज़ है जिस पर मेज़पोश पड़ा है जो कि आगे से ढका है, मेज़ पर एक रोटी का टुकड़ा है। मेज़

के नीचे एक तराज़ू रखा है, पर दिखाई नहीं देता)

(म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ होती है और दाहिनी तरफ़ से काली बिल्ली और बाई तरफ़ से सफेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहन, नमस्ते!

सफ़ेद बिल्ली : नमस्ते बहन, नमस्ते!

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफ़ेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ!

काली बिल्ली : मैं भी भूखी हूँ।

सफ़ेद बिल्ली : खाने में कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उस खोज में मैं भी निकली हूँ।

सफ़ेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफ़ेद बिल्ली : रखी मेज़ पर है वो रोटी। लपकूँ? कोई आ न जाए तो...

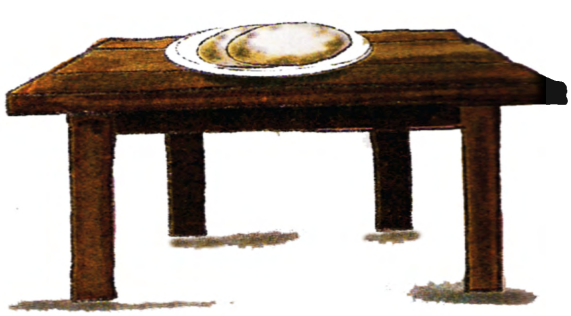

काली बिल्ली : तू डर, मैं तो लेने चली...

(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है।)

सफ़ेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी मेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफ़ेद बिल्ली : मैं ना दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती? क्या मेरी दो आँखें नहीं हैं? डरती थी उस तक जाने में! जा डरपोक कहीं की, जा भाग, रोटी मेरी।

सफ़ेद बिल्ली : रोटी, कहे दे रही, मेरी।

मैं ले जाने तुझे न दूँगी।

काली बिल्ली : देख, राह से मेरी हट जा। ले जाऊँगी, तूझे न दूँगी।

सफेद बिल्ली : देखूँ, कैसे ले जाती है! जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर!

काली बिल्ली : पहले दौड़े, दौड़ के ले ले पहला उसका हक रोटी पर। रोटी पर पहला हक मेरा।

सफेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी', 'रोटी मेरी' कहकर एक-दूसरे पर गुर्राती हैं)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड रही हो? तुम कहती हो रोटी मेरी। *(सफ़ेद बिल्ली से)* तुम कहती हो रोटी मेरी। *(काली बिल्ली से)* रोटी किसकी? मैं इसका फ़ैसला करूँगा। चलो कचहरी, मेरे पीछे-पीछे आओ।

(बंदर दोनों से छीनकर रोटी अपने हाथ में लेकर चलता है, दोनों बिल्लियाँ पीछे-पीछे जाती हैं)

(दूसरा दृश्य–बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज़ पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है। दोनों बिल्लियाँ मेज़ के सामने इधर-उधर खड़ी हैं।)

बंदर (सफ़ेद बिल्ली से): बोलो, तुमको क्या कहना है?

सफ़ेद बिल्ली : श्रीमान, पहले मैंने ही रोटी रखी थी, इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता है।

बंदर (काली बिल्ली से): बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमान, पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता है।

बंदर (सफ़ेद बिल्ली): एक आँख से देखी थी, या दो आँखों से?

सफ़ेद बिल्ली : दो आँखों से, दोनो आँखों से।

बंदर (काली बिल्ली : एक टाँग से झपटी थी या दोनों टाँगों से?

काली बिल्ली : दो टाँगों से, दोनों टाँगों से।

दोनों बिल्लियाँ : कहीं न कोई।

कोई न कहीं।

बंदर : बात बराबर। बात बराबर। मेरा फ़ैसला है कि रोटी तोड़-तोड़कर तुम्हें बराबर दे दी जाए। मेरे पास धरम-काँटा है।

(बंदर मेज़ के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर)

बंदर : यह टुकड़ा कुछ भारी निकला। इसमें से थोड़ा खाकर हल्का कर दूँ।

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर है और दूसरा नीचे)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला। अब इसको थोड़ा खाकर हल्का कर दूँ।

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो गया और दूसरा ऊपर)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला। टुकड़े भी कितने खोटे हैं, एक-दूसरे को छोटा दिखलाने में ही लगे हुए हैं। मुँह थक गया बराबर करते-करते और तराजू उठा-उठाकर हाथ थक गया।

(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल गया। हाथ मलती हुई बड़ी उदासी से एक-दूसरे को देखते हुए)

सफ़ेद बिल्ली : आप थक गए, अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा-खुचा जो उसको दे दें, हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं तुम फिर झगड़ोगी। मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ। बचा-खुचा भी लेता हूँ।

(इतना कहकर बची-खुची रोटी भी बंदर खा जाता है। और तराजू लेकर भाग जाता है।)

दोनों बिल्लियाँ : आपस में झगड़ा कर बैठीं, बुद्धि अपनी खोटी।
अब पछताने से क्या होता, बंदर हड़पा रोटी।

-हरिवंशराय बच्चन

☺ लड़ाई–झगड़ा।

- दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ क्या थी?
  - उनके झगड़े का हल कैसे निकाला गया?
- तुम किस-किस के साथ अक्सर झगड़ते हो?
  - झगड़ते समय तुम क्या-क्या करते हो?
  - जब तुम किसी से झगड़ते हो तो तुम्हारा फ़ैसला कौन करवाता है?

☺ जूले।

लेह में लोग एक-दूसरे से मिलने पर एक-दूसरे को जूले कहते हैं। मिलने पर दोनों बिल्लियाँ एक-दूसरे को नमस्ते कहती हैं।

- तुम इन लोगों से मिलने पर क्या कहती हो?
  - तुम्हारी सहेली/दोस्त
  - तुम्हारे शिक्षक
  - तुम्हारी दादी/नानी
  - तुम्हारे बड़े भाई/बहन
- अब पता लगाओ तुम्हारे साथी कक्षा में कितने अलग-अलग तरीकों से नमस्ते कहते हैं?

☺ तुम्हें क्या लगता है।

- ✧ अगर बंदर बीच में नहीं आता तो तुम्हारी राय में रोटी किस बिल्ली को मिलनी चाहिए थी?
- ✧ बंदर ने बिल्लियों से यह सवाल क्यों पूछा होगा कि उन्होंने रोटी
  - ✦ एक आँख से देखी थी या दोनों आँखों से?
  - ✦ एक टाँग से झपटी थी या दोनों टाँगों से?

☺ बंदर–बाँट।

- ✦ कहानी का शीर्षक बंदर-बाँट क्यों है?
- ✦ तुम नाटक को क्या नाम देना चाहोगी?
- ✦ जो शीर्षक तुमने दिया, उसे सोचने का कारण बताओ।

☺ माप–तोल।

- ✦ बंदर ने रोटी बराबर बाँटने के लिए तराजू का इस्तेमाल किया। तराजू का इस्तेमाल चीज़ों को तोलने के लिए करते हैं। नीचे दी गई चीज़ों में से किन चीज़ों को तोलकर खरीदा जाता है?

- तोलते वक्त एक पलड़े में तोली जाने वाली चीज़ रखी जाती है और दूसरे में तोलने के लि बाट।बाट किस धातु या चीज़ का बना होता है?

- बाट तोली जाने वाली चीज़ का बज़न बताता है। बज़न किलोग्राम या ग्राम में बताया जाता है। पता करो बाज़ार में कितने किलोग्राम या ग्राम के बाट मिलते हैं। (फलवाले, सब्जीवाले या परचून की दुकान से पता कर सकते हो।)

_____ _____ _____ _____ _____

☺ वह! क्या खुशबू है!

बिल्लियों को रोटी की महक आ रही थी।

- तुम्हें किन-किन चीज़ों के पकने की महक अच्छी लगती है?

- और किन-किन चीज़ों की महक आती है जो खाने से जुड़ी नहीं हैं। जैसे-साबुन की सुगंध, जूते की पॉलिश की गंध आदि।

_____ _____ _____ _____ _____

☺ आगे–पीछे।

मुझे महक रोटी की आती।

इस वाक्य को इस तरह भी लिख सकते हैं–

मुझे रोटी की महक आती।

तुम भी इसी तरह नीचे दिए वाक्यों के शब्दों को आगे–पीछे करके लिखो।

- उसी खोज में मैं भी निकली।

  मैं भी .....

- रखी मेज़ पर है वो रोटी

  वो रोटी .....

- डरती थी उस तक जाने में।

  .....

- मैं ले जाने तुझे न दूँगी।

  .....

- जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर।

  .....

☺ एक और बँटवारा।

अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज मिला। दोनों सोचने लगी, इस तरबूज़ को कैसे बाँटा जाए कि तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कट्टो बिल्ली बगीचे में अपने भाई-बहनों के साथ खेल रही थी। इतने में बंदर उसकी तस्वीर खींच ली। तस्वीर देखकर बताओ इनमें से कट्टो बिल्ली कौन-सी है?

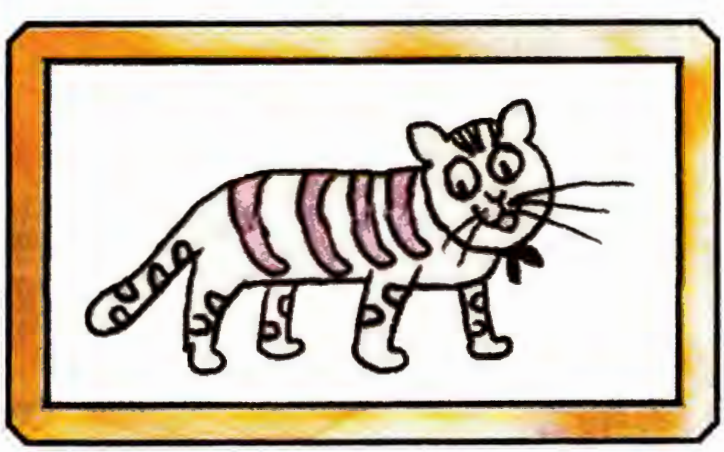

(कट्टो बिल्ली की तस्वीर)

मुखौटे

बच्चों से ऐसा ही मुखौटा बनाने के लिए कहें। इसी प्रकार से अन्य जानवरों के मुखौटे बनाए जा सकते हैं। इन मुखौटों को पहनाकर उनसे अभिनय करवाएँ।

पाठ – 9

अक्ल बड़ी या भैंस

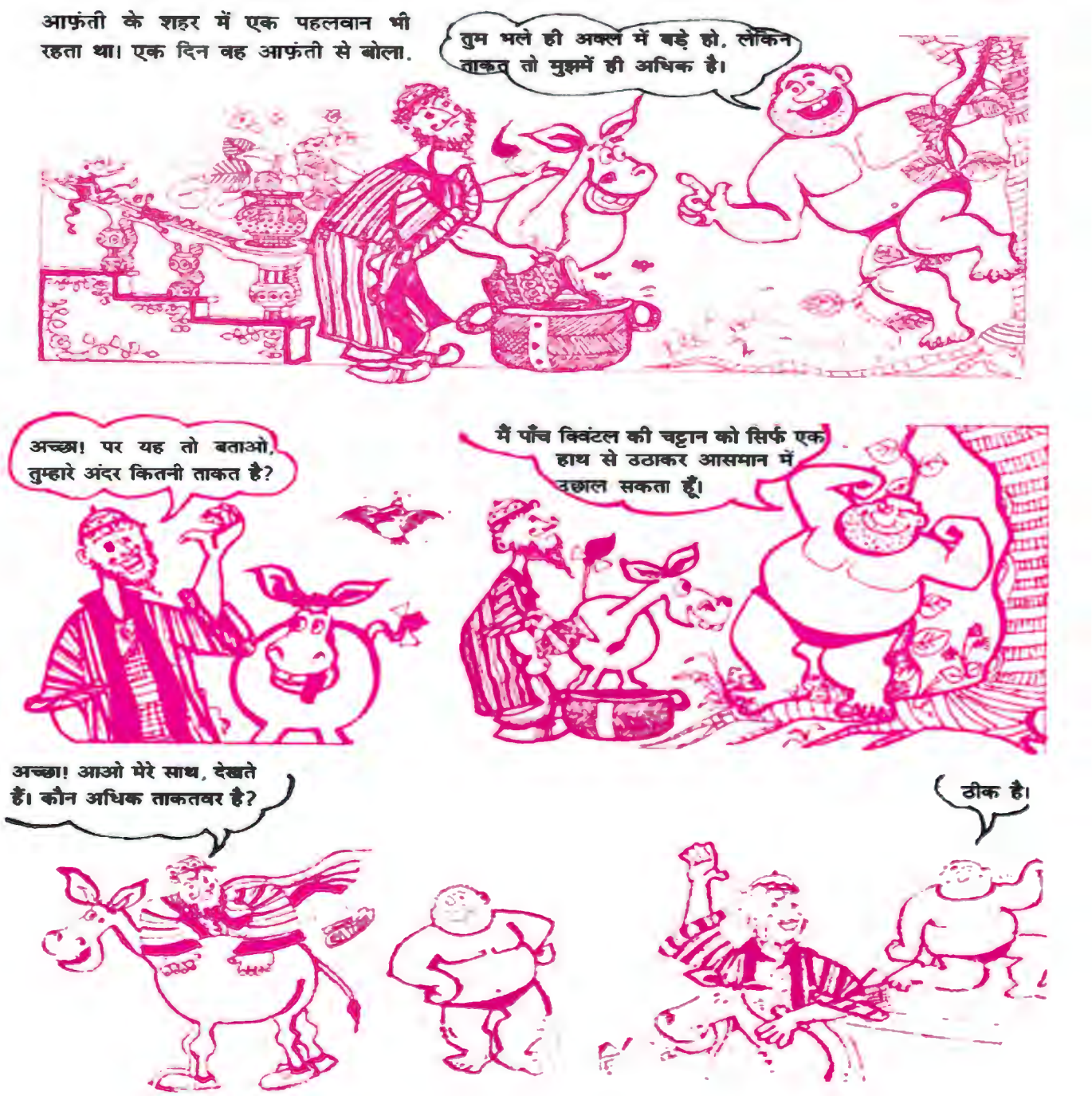

आफ़ंती पहलवान को शहर की चारदीवारी के पास ले गया। और बोला...
अब इस रूमाल को दीवार के पार फेंककर दिखाओ।
यह भी कोई बड़ी बात है!
पहलवान ने रूमाल उठाकर पूरी ताकत लगाकर ज़ोर से फेंका।

लेकिन रुमाल वहीं गिर पड़ा। आफ़ंती ठहाका मारकर हँस पड़ा।

आफ़ंती ने एक छोटा-सा पत्थर उठाया। रुमाल में उसको बांधा और दीवार के पार फेंक दिया।

शिवेंद्र पांडिया

अवंती ने एक छोटी-सी रंगाई की दुकान खाली और गाँववासियों के लिए कपड़ा रंगना शुरू कर दिया। सब लोग उसकी रंगाई की प्रशंसा करने लगे। धीरे-धीरे उसकी दुकान चल निकली। अवंती की प्रशंसा सुनकर ऐ सेठ को बहुत ईर्ष्या महसूस होने लगी।

अवंती को परेशान करने के लिए वह सेठ कपड़े का एक टुकड़ा लेकर अवंती की दुकान में जा पहुँचा। दरवाज़े के अंदर घुसते ही सेठ बुलंद आवाज़ में बोला–अवंती, ज़रा यह कपड़ा तो अच्छी तरह से रंग दो। मैं देखना चाहत हूँ तुम्हारा हुनर कैसा है। तुम्हारी काफ़ी तारीफ सुनी थी, इसीलिए आया हूँ।

अवंती ने सेठजी से पूछा–सेठजी इस कपड़े को आप किस रंग में रंगवाना चाहते हैं?

सेठ ने कहा–रंग? रंग के बारे में मेरी काई खास पसंद तो है नहीं, पर मुझे हरा, पीला, सफ़ेद, नारंगी, नीला, आसमानी, काला और बैंगनी रंग कतई अच्छे नहीं लगते। समझे कि नहीं?

अवंती ने जवाब दिया–समझ गया हूँ, अच्छी तरह समझ गया हूँ। मैं ज़रूर आपकी पसंद की रंगाई कर दूँगा।

अवंती ने सेठ का मंसूबा भाँपते हुए उसके हाथ से कपड़े का टुकड़ा ले लिया।

सेठ ने खुश होकर कहा–अच्छा, तो इसे लेने मैं किस दिन आऊँ?

अवंती ने कपड़े को अलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा दिया और सेठ से बोला–आप असे लेने सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को छोड़कर किसी भी दिन आ सकते हैं।

सेठ समझ गया कि उसकी चाल उल्टी पड़ चुकी है अतः भलाई धीरे से खिसक लेने में ही है। फिर उस सेठ ने दोबारा अवंती की दुकान में घुसने की हिम्मत नहीं की।

–आर०एस० त्रिपाठी

☺ कहानी से।

- ☞ सेठ ने किस रंग में कपड़ा रंगने को कहा?
- ☞ अवंती ने कपड़ा अलमारी में बंद कर दिया। क्यों?
- ☞ सेठ कपड़ा लेने किस दिन आया होगा?

☺ कौन छुपा है कहाँ?

नीचे के वाक्यों में कुछ हरी-भरी सब्ज़ियों के नाम छुपे हैं। ढूँढो तो ज़रा-

- ☞ अब भागो भी, बारिश होने लगी है।
- ☞ मामू लीला मौसी कहाँ है?
- ☞ शीला के पास बैग नहीं है?
- ☞ रानी बोली-हमसे मत बोलो।
- ☞ गोपाल कबूतर उड़ा दो।

☺ सही जोड़े मिलाओ।

☺ मुहावरे।

चित्रों को देखो। क्या इन्हें देखकर तुम्हें कुछ मुहावरे या कहावतें याद आती हैं? उन्हें लिखो।

अँधेरा

.....

आरसी

.....

आस्तीन

.....

ग्यारह

.....

☺ कहो कहानी।

विद्यालय, गुरुजी, छुट्टी, बंदर, डंडा, पेड़, केला, ताली, बच्चे, भूख। इन शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में कुछ बातें आई होंगी। इन सब चीज़ों के बारे में एक छोटी-सी कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ।

☺ उछालो।

एक रुमाल या कोई छोटा-सा कपड़ा उछालकर देखो। किसका रुमाल सबसे ऊँचा उछलता है?

रुमाल के साथ बिना कुछ बाँधे इसे और ऊँचा कैसे उछाला जा सकता है?

☺ समझ – समझदारी।

रंगाई शब्द रंग से बना है। इसी तरह और शब्द बनाओ।

रंग	रंगाई
साफ़	....
चढ़	....
बुन	....

☺ क्या समझे।

जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, उनका मतलब बताओ–

- मुझे बैंगनी रंग <u>कतई</u> अच्छा नहीं लगता। ____________
- अवंती ने सेठ का <u>मंसूबा</u> भाँप लिया। ____________
- मैं तुम्हारा <u>हुनर</u> देखना चाहता हूँ। ____________
- सेठ बुलंद आवाज़ में बोला। ____________
- सेठ को ईर्ष्या होने लगी। ____________
- रंग के बारे में मेरी कोई खास पसंद तो तो है नहीं। ____________

☺ कैसा लगा आफ़ंती।

आफ़ंती के बारे में कुछ वाक्य लिखो। तुम उसके कपड़ों, शक्ल-सूरत, पालतू पशु, बुद्धि आदि के बारे में बता सकती हो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

☺ जोड़े ढूँढो-

दिन-रात *मेला-मैला*

ऊपर दिए गए शब्दों के जोड़ों में केवल एक मात्रा बदली गई है। किसी भी मात्रा का बदलने से अर्थ भी बदल जाता है ऐसे और जेड़े बनाओ। देखें, कौन सबसे ज़्यादा जोड़े ढूँढ पाता है।

....

....

....

....

☺ कुछ कलाकारी।

कब आऊँ वाले किस्से को चित्रकथा के रूप में लिखो।

☺ क्या है फ़ालतू।

कभी-कभी हम अपनी बात करते हुए ऐसे शब्द भी बोल देते हैं, जिनकी कोई जरूरत नहीं होती। इसी तरह इन वाक्यों में कुछ शब्द फ़ालतू हैं। उन्हें ढूँढ अलग करो-

- बाज़ार से हरा धनिया पत्ती भी ले आना।
- एक पीला पका पपीता काट लो।
- अरे! रस में इतनी सारी ठंडी बर्फ क्यों डाल दी?
- ज़ेबा, बगीचे से दो ताज़े नींबू तोड़ लो।
- बेकार की फ़ालतू बात मत करो।

पाठ – 10

सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई
ठंड की पहने वर्दी आई।

सबने लादे ढेर से कपड़े
चाहे दुबले, चाहे तगड़े

नाक सभी की लाल हो गई
सुकड़ी सबकी चाल हो गई।

ठिठुर रहे हैं, काँप रहे हैं
दौड़ रहे हैं, हाँफ रहे हैं।

धूप में दौड़ें तो भी सर्दी
छाँओं में बैठें तो भी सर्दी

बिस्तर के अंदर भी सर्दी
बिस्तर के बारह भी सर्दी

बाहर सर्दी, घर में सर्दी।
पैर में सर्दी, सर में सर्दी।

इतनी सर्दी किसने कर दी।
अंडे की जम जाए ज़र्दी।

सारे बदन में ठिठुरन भर दी
जाड़ा है मौसम बेदर्दी।

–सफ़दर हाश्मी

पाठ – 11

कहानी की कहानी

कहानी सुनने में हम सब को मज़ा आता है।

तुम्हें घर पर कौन कहानी सुनाता है?

किसकी कहानियाँ सबसे अच्छी लगती हैं?

किसका सुनाने का तरीका सबसे मज़ेदार है? भला क्यों?

बहुत पुरानी बात है। तब भी लोग कहानियाँ सुनते और सुनाते थे- राजा-रानी, परियों की कहानी, शेर और गीदड़ की कहानी। माँ-बाप, बच्चे, दादी-नानी की कहानी, शेर और गीदड़ की कहानी। माँ-बाप, बच्चे, दादी-नानी को घेरकर बैठ जाते और बार-बार अपनी मनपसंद कहानी सुनते। बड़े होने पर वे बच्चे अपने बच्चों को कहानी सुनाते। फिर बड़े होकर बच्चे आगे अपने बच्चों को वही कहानियाँ सुनाते। इसी तरह कहानियों का यह सिलसिला आगे बढ़ता। उनके बच्चों के बच्चे, फिर उनके बच्चों के बच्चे उन कहानियों का मज़ा लेते जाते। सुनने-सुनाने से ही कई कहानियाँ आज हम तक पहुँची हैं।

कहानी सुनाने के कई अलग तरीके थे। कोई आवाज़ बदल-बदलकर सुनाता। कोई आँखें मटकाकर। कोई हाथ के इशारों से बात आगे बढ़ाता। कोई गाकर और कोई नाचकर भी कहानी को सजाता। आज भी कई लोग पुरानी कहानियों को नाच-गाकर सुनाते हैं। हर जगह नाच के ऐसे कई अलग-अलग तरीके हैं। क्या तुम्हारे इलाके में कोई ऐसा कलाकार या कहानी करने वाला है?

पंचतंत्र की कहानियाँ सालों से लोग सुनते-सुनाते चले आ रहे थे। फिर लोगों ने सोचा क्यों न इनको लिखकर रख लें। इस तरह भूलेंगी नहीं और सँभली भी रहेंगी। ऐसी कई कहानियों को एक-साथ पोथी में लिख लिया। पोथी का नाम रखा- *पंचतंत्र*।

उस समय लोगों के पास कागज़ और किताबें तो होती नहीं थीं। सोचो, कहानियों को कैसे लिखा होगा?

उस ज़माने के लोग पत्तों पर या पत्थर पर लिखते थे। पेड़ की छाल का भी इस्तेमाल करते थे। खजूर के बड़े पत्ते देखे हैं? उनको छाया में सुखा लेते थे। तेल से उनको नरम बनाकर फिर उन पर कहानी लिखते, पर लिखते किससे? पेंसिल और पेन तो तब थे नहीं। पक्षी के पंख से कलम बना लेते या बाँस को नुकीला बनाकर उससे लिखते। स्याही भी खुद घर पर बनाते थे। क्या तुमने कहीं लकड़ी की कलम देखी है?

पंचतंत्र की कहानियाँ कई सौ साल पहले लिखी गई थीं। दुनिया भर में ये कहानियाँ पसंद की जाती थीं। कई लोगों ने अपनी-अपनी भाषा में इस पोथी को लिखा था। जैसे-उड़िया, बंगाली, मराठी, मलयालम, कन्नड़ आदि।

यहाँ पंचतंत्र की एक कहानी की एक पंक्ति दी गई है। यह पंक्ति कई भाषाओं में लिखी हैं।

सिंह-शृगाल-कथा

अस्ति कस्मिंश्चित् वनोद्देशे वज्रदंष्ट्रो नाम सिंहः ।

किसी वन के एक इलाके में वज्रदंष्ट्र नाम का एक सिंह रहता था ।

କୌଣସି ବଣର ଏକ ସ୍ଥାନରେ ବଜ୍ରଦଂଷ୍ଟ୍ର ନାମକ ସିଂହଟିଏ ରହୁଥିଲା ।.

কোনো বোনের ঐক ভাগে বজ্রদংষ্ট্র নামের ঐকটা সিংহো থাকতো ।

ഏതോ ഒരു കാട്ടി വജ്രദംഷ്ട്രനഎന്നു പേരായ ഒരു സിംഹം ഉ ായിരുന്നു

इनमें से तुम कौन-सी भाषा पहचान पाए?

क्या कोई पुरानी पोथी तुमने अपने आस-पास देखी?

आज हम इन पुरानी पोथियों को सँभालकर रखते हैं।लोगों ने बहुत मेहनत से इन्हें लिखा था। इनमें कहानियाँ संजोकर, बचाकर रखी थीं। वे कहानियाँ हम आज भी सुनते और पढ़ते हैं। इन्हें तुम अपने बच्चों को भी सुनाओगे और पढ़ाओगे और इन्हें तुम्हारे बच्चों के बच्चे भी पढ़ेंगे। पढ़ेंगे न?

बच्चों के पत्र

कैलाश कालोनी,
19 नवंबर 2005

प्यारी मौसी,

नमस्ते, मौसी आप की याद आती है। जब आप नहीं होती तो मुझे रोना आता है। मौसी ज़रूर रक्षाबंधन पर आना। मौसी भाई और बहन कैसी हैं और आप कैसी हो। हम यहाँ ठीक हैं लेकिन छोटे भाई को बुखार आ गया था। अब तो वह ठीक है। मौसी हमारे घर कब आओगी। मौसी ज़रूर आना हमारे घर हम पार्टी मनाएँगे। ममता और रोहित पढ़ने जाते हैं तो उनसे कहना वो दोनों ध्यान से पढ़ें। राहुल तो रोता है कहता है कि मुझे मम्मी के पास जाना है। हम किसी दिन आएँगे। मौसी मैं पत्र बंद करती हूँ। छोटे भाई-बहन को प्यार देना।

आपकी बेटी,
राधा

अरेरा कालोनी
भोपाल
10 अप्रैल 2005

आदरणीय बुआजी,

नमस्ते।

आशा है आप सब ठीक होंगे। मेरी यहाँ परीक्षा होने वाली है। इस बार माँ ने कहा है कि गर्मी की छुट्टियों में हम सब आपके पास आ रहे हैं। मुझे आपकी बहुत याद आती है। मुनिया पाड़ी और राजू भैया कैसे हैं? हम सब छुट्टियों में खूब खेलेंगे। गाँव में आम भी ढेर सारे खाएंगे। मैं आप सबके लिये यहाँ से क्या लाऊँ? बुआ जी जब मैं आऊँगी तो आप मेरे खाने के लिए मालपुआ की तैयारी करके रखना। बाकी बातें मिलने पर करेंगे।

आपकी बेटी
सदिमा